इकाई : 9 बिहारी का काव्य

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्‌देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 बिहारी का जीवन परिचय

9.2.1 युगीन परिवेश, कवि व्यक्तित्व और रचना

9.2.2 सतसई परंपरा और 'बिहारी सतसई'

9.3 बिहारी की कविता में शृंगार, सौंदर्य और प्रेम

9.3.1 संयोग और वियोग शृंगार

9.3.2 सौंदर्य और प्रेम-चित्रण

9.4 बिहारी की कविता में भक्ति, नीति और लोक

9.5 बिहारी की कविता की काव्य भाषा और काव्य रूप

9.6 बिहारी की कविता का वाचन और आस्वादन

9.7 सारांश

9.8 शब्दावली

9.9 उपयोगी पुस्तकें

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में रीतिसिद्ध कवि बिहारी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी दी गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बिहारी के युगीन परिवेश, उनका जीवन परिचय और कृतित्व का परिचय दे सकेंगे;
- सतसई और मुक्तक काव्य परंपरा में 'बिहारी सतसई' के महत्व का प्रतिपादन कर सकेंगे;
- बिहारी के काव्य में व्यक्त प्रेम, सौंदर्य और श्रृंगार के स्वरूप को स्पष्ट कर पाएँगे;
- बिहारी के काव्य में लोक जीवन के विविध रंगो का विवेचन करते हुए नीतिकाव्य और भक्तिकाव्य के तत्व तलाश सकेंगे; तथा
- बिहारी की कविता के काव्यशिल्प– भाषा, अलंकार और छंद से परिचित हो सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। रीतिकाल के आलोचकों और इतिहासकारों ने कवि बिहारी अथवा बिहारीलाल को 'रीतिसिद्ध' काव्यधारा का कवि माना है। रीतिसिद्ध अर्थात रीतिकविता की वह धारा जिसका कवि रीति प्रणाली तथा सिद्धांत का अनुगमन न कर उसे आत्मसात कर लेता है दूसरी ओर वह रीति से मुक्त होने का प्रयास भी करता है। यों वह रीति प्रणाली से न पूरी तरह आबद्ध होता है न ही मुक्त। कह सकते हैं कि बिहारी रीतिशास्त्र की बँधी लीक और स्वच्छंद रीतिकाव्य के बीच के कवि हैं। बिहारी के काव्य में युगीन परिवेश का दरबारीपन है, भक्ति की तासीर है और सौंदर्य और प्रेम की गहराई भी है। श्रृंगार के संयोग और वियोग की संवेदना तो है ही। नायिका भेद, अलंकार, सौंदर्य, प्रेम भक्ति, नीति

की कविता लिखते हुए बिहारी की कविता रीतिकालीन बँधी-बँधाई रीति से अलग मौलिकता के रंग में रँगी है। छोटे से छंद दोहे में बिहारी कमाल की कला का परिचय देते हैं। कविता के बाह्य चमत्कार, श्रृंगार के साथ प्रेम और सौंदर्य की गहराई जैसी बिहारी में है वैसी उस युग के दूसरे कवियों में न थी। नागर बोध और सामंती-विलासी चेतना से भरे नायक-नायिका के हाव-भाव से बिहारी युगीन सामंती संस्कृति का यथार्थ प्रस्तुत करते हैं। श्रृंगार के ऐंद्रिक चित्रण में पतनशील सामंती प्रवृत्तित का दर्शन होता है। भक्तिकाल के नायक-नायिका कृष्ण और राधा बिहारी के यहाँ ईश्वरत्व छोड़कर, सदाचार और नैतिकता से मुक्त होकर प्रेम करते हैं। जीवन के बाह्य श्रृंगार और सौंदर्य के साथ बिहारी की कविता में कम ही सही प्रेम की गहराई भी है। बिहारी की बहुज्ञता ही उन्हें रीतिकाल का विरल कवि बनाती है। उनकी कविता में जीवन की विविध छवियाँ हैं। दोहा जैसे छोटे छंद में शब्दालंकार और अर्थालंकार की छटा देखने लायक है। शब्द प्रयोग और चित्रात्मकता तो अद्‌भुत है कविवर बिहारी की।

9.2 बिहारी का जीवन परिचय

रीतिकालीन मुक्तक परंपरा के कवि बिहारी का जन्म 1595 ई. को वसुआ गोविंदपुर गाँव, ग्वालियर में हुआ। इनके पिता का नाम केशवराय था। बचपन बुंदेलखंड में बीता और विवाह मथुरा में हुआ। खुद बिहारी ने लिखा भी है :

जनम ग्वालियर जानिए, खंड बुंदेले बाल।

तरूनाई आई सुखद, मथुरा बीस ससुराल।।

बिहारी जी के बचपन में पिता केशवराय इन्हें ग्वालियर से ओरछा ले गए। ओरछा में ही इन्होंने प्रसिद्ध रीतिकवि केशवदास से काव्य शिक्षा प्राप्त की। वहीं पर संस्कृत और प्राकृत भाषा के प्रमुख ग्रंथों का अध्ययन किया। बिहारी का अब्दुर्रहीम खानखाना से भी अच्छा संपर्क था। मुगल बादशाह शाहजहाँ की कृपा बिहारी को प्राप्त हुई तो जोधपुर, बूँदी आदि रियासतों से भी इन्हे प्रशंसा और वृत्ति मिली। जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि होने का गौरव बिहारी को प्राप्त हुआ। इस दरबार में इनको धन और यश दोनों मिला। जयपुर के राजकुमार रामसिंह को विद्यारंभ भी इन्होंने ही कराया। नरहरिदास और पं. जगन्नाथ के संपर्क से कवि बिहारी जी को अपने काव्य बोध को परिपक्व करने में सहयोग मिला। जीवन का अंतिम दौर निराशा से भरा रहा। 1664 ई. में मथुरा में इनका निधन हुआ।

9.2.1 युगीन परिवेश, कवि व्यक्तित्व और रचना

किसी भी रचनाकार का रचनात्मक व्यक्तित्व और उसकी रचना पर युगीन परिवेश का गहरा असर होता है। युग के सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवेश से कवि व्यक्तित्व और दृष्टि का निर्माण होता है। बिहारी का समय मुगल सम्राट अकबर के उत्तर-समय से औरंगजेब के आरंभिक दौर तक था। इस तरह जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन सत्ता की रीति-नीति को बिहारी ने देखा। शाहजहाँ का काल तो स्थापत्य, चित्र और कला की दृष्टि से वैभव का काल था। उच्च वर्ग में भोग-विलास की अधिकता थी। निम्न वर्ग की जनता और उच्च वर्ग में बड़ा फर्क था। कलाकारों और कवियों को उच्च वर्ग में आश्रय मिला हुआ था। राजा, नवाब, मनसबदारों के दरबार में होने से कलाकारों और कवियों का स्वतंत्र व्यक्तित्व कम ही उभर पाया। दरबारों में रत्नों, आभूषणों और आमोद-

प्रमोद का बाहुल्य था। अवध, दिल्ली, बुंदेलखंड, राजस्थान के राजाओं, नवाबों के विलासिता के किस्सों का प्रमाण उस युग के कवियों की रचनाओं में साफ देखा जा सकता है। रीतिकाल के इस दौर में अधिकांश कवि सामंती वैभव की चमक-दमक की प्रशंसा करते हैं लेकिन बिहारी जैसे कुछ विरले कवि युगीन यथार्थ का चित्रण करते, उससे टकराते और आश्रयदाता को झकझोरते हुए अपने कवि व्यक्तित्व का विकास करते हैं। अपने आश्रयदाता जयपुर नरेश राजा जयसिंह द्वारा प्रजा विमुख होकर नवविवाहिता पत्नी के साथ अधिक आसक्त होने पर उन्हें चेताते हुए यह दोहा लिखना उस दौर में एक बड़े कवि के कवि व्यक्तित्व का साहस ही कहा जा सकता है :

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।

अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगें कौन हवाल।।

मुगल राजाओं के संकेत पर मुगल विरोधियों का राजा जयसिंह द्वारा किए गए निर्मम व्यवहार से दुखी होकर कविवर बिहारी ने अपने आश्रयदाता की इस नीति का प्रतिवाद किया। यह बिहारी के कवि व्यक्तित्व का साहस ही था :

स्वारथु, सुकृतु न श्रम बृथा; देखि, बिहंग, बिचारि।

बाक, पराऐं पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि।।

युगीन सामंती विलास, आमोद-प्रमोद, कबूतर, शतरंज, चौसा आदि खेल और विलासिता में डूबे उस सामंती युग पर कटाक्ष करते हुए बिहारी ने लिखा है :

ऊँचैं चितै सराहियतु, गिरह कबूतरू लेतु।

झलकति दृग मुलकित बदनु, तनु पुलकित किहिं हेतु।।

भक्तिकालीन आध्यात्मिकता की जगह रीतिकालीन परिवेश में भक्ति का स्वरूप भी बदल गया। बिहारी के यहाँ राधा-कृष्ण प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति सांसारिकता और भौतिकता के अधिक निकट है। श्रृंगार में भक्ति और भक्ति में श्रृंगार रीति काल की कविता की विशेषता है।

कवि बिहारी का व्यक्तित्व सामंती परिवेश में निर्मित हुआ जिसमें नागर कला का आधिक्य था, लेकिन बिहारी अपने युग के अन्य रीतिकालीन कवियों की तरह उस सामंती वैभव के प्रशंसक नहीं, आलोचक थे। जीवन के गहरे अनुभव और नागर के साथ लोक की गहरी समझ के कारण ही बिहारी अपने सामंती समाज और राजनीतिक संकीर्णता पर कठोर व्यंग्य और कटाक्ष कर पाते हैं।

बिहारी की रचना को 'बिहारी सतसई' नाम से जाना जाता है। इस रचना में 713 दोहे और सोरठे संगृहीत हैं। यह मुक्तक परंपरा की रचना है। 'बिहारी सतसई' के दोहों के बारे यह दोहा प्रचलित है जो सतसई की महत्ता को बताता है :

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।

देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

बिहारी के दोहों की गूढ़ता-गंभीरता को ध्यान में रखकर इनकी 'सतसई' को 'गागर में सागर' कहा गया है। 'बिहारी सतसई' में नायक-नायिका भेद और अलंकार को सिद्धांत-उदाहरण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, लेकिन इनकी सुंदर छटा इसमें व्याप्त है। 'बिहारी सतसई' में श्रृंगार, सौंदर्य, प्रेम, भक्ति, नीति के साथ शास्त्र की विविध छवियाँ मौजूद हैं। भक्तिकाल में

'रामचरितमानस' की तरह रीतिकाल में 'बिहारी सतसई' को कवियों, आलोचकों और साहित्येतिहासकारों ने खूब सराहा है। इन रचनाओं पर कई टीकाएँ भी लिखीं गई हैं।

'बिहारी सतसई' की पहली टीका 1662 ई. में कृष्णलाल जी ने लिखा। अन्य प्रमुख टीकाओं में 1717 ई. में सुरति मिश्र ने 'अमर चंद्रिका', 1777 ई. में हरिचरणदास ने 'हरिप्रकाश', 1811 ई. में लल्लूलाल जी ने 'लाल चंद्रिका' नाम से 'बिहारी सतसई' की टीका लिखी। हिंदी गद्य के विकास के साथ 'बिहारी सतसई' पर कई श्रेष्ठ भाष्य और टीका का लेखन हुआ। लाला भगवानदीन ने 'बिहारी बोधिनी', पं. जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने 'बिहारी रत्नाकर' और पद्मसिंह शर्मा ने 'संजीवनी भाष्य' के नाम से 'बिहारी सतसई' की टीका लिखी। अन्य भारतीय भाषाओं में भी 'बिहारी सतसई' का भाष्य लिखा गया।

9.2.2 सतसई परंपरा और 'बिहारी सतसई'

'सतसई' शब्द संस्कृत के 'सप्तशती' शब्द का अपभ्रंश है। साहित्य में मार्कंडेय पुराण में दर्ज 'दुर्गासप्तशती' सप्तशती श्रृंखला की आरंभिक रचना है किंतु यह रचना धार्मिक है। हिंदी की सतसई परंपरा ने जिन रचनाओं से प्रभाव ग्रहण किया उसमें प्रथम कृति हाल कृत 'गाथा सप्तशती' है। 700 गाथाओं की यह रचना प्राकृत भाषा में है। इस रचना में प्रेम और श्रृंगार का मनोहारी चित्रण है। संस्कृत के सतसई ग्रंथों में अनेक ग्रंथ शतक ग्रंथ हैं जो सतसई परंपरा में ही गिने जाते है। सतसई साहित्य में 'गाथा सप्तशती' के बाद भर्तृहरि का 'श्रृंगार शतक', 'वैराग्य शतक' और 'नीति शतक' का नाम शुमार किया जाता है।

इन कृतियों में श्रृंगार के ऐहिक वर्णन के साथ नीति कथन का आकर्षक वर्णन किया गया है। इसी परंपरा में कवि अमरूक के 'अमरूक शतक' का नाम लिया जाता है। अमरूक शतक

में शृंगार का लालित्यपूर्ण चित्रण है। हिंदी की सतसई परंपरा पर 'अमरूक शतक' का सर्वाधिक प्रभाव है। हिंदी में सतसई परंपरा को दो श्रेणियों में बाँटा गया है। एक श्रेणी 'सूक्ति सतसई' की है जिसमें लोक और नीति की अधिकता है। इसी श्रेणी की रचनाओं मे 'तुलसी सतसई', 'रहीम सतसई' और 'वृंद सतसई' शामिल हैं। दूसरी श्रेणी की सतसई परंपरा को 'शृंगार सतसई' कहा गया। इस परंपरा में 'बिहारी सतसई' और 'मतिराम सतसई' जैसी रचनाएँ हैं।

हिंदी की सतसई की परंपरा में 'बिहारी सतसई' सर्वोत्कृष्ट रचना है। 'बिहारी सतसई' में शृंगार, प्रेम, नीति, भक्ति, ज्योतिष और सौंदर्य की सुंदर-प्रौढ़ अभिव्यक्ति है। भाषा की समाहार शक्ति की यह अद्‌भुत कृति है। दोहा जैसे लघु छंद में बिहारी ने लोक और शास्त्र, प्रेम और सौंदर्य, भक्ति और नीति का विरल संयोग किया है। भाव सघनता और वचन वक्रता का सुंदर काव्य है– 'बिहारी सतसई'। नायक-नायिका का हाव-भाव, प्रेम, सौंदर्य और शृंगार को भाषा की चित्रात्मकता में जैसा 'बिहारी सतसई' में पेश किया गया वैसा उत्तर मध्यकाल के अन्य कवियों में दुर्लभ है। निम्नलिखित दोहे में देख लें जिसमें नायक-नायिका के द्वारा नेत्रों की भाषा का सुंदर प्रयोग है।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन मैं करत हैं, नैननु हीं सब बात।।

'बिहारी सतसई' मुक्तक परंपरा की भी सर्वोत्कृष्ट कृति है। 'बिहारी सतसई' अपनी समाहार शक्ति के कारण दोहे जैसे छोटे छंद में जीवन की, संवेदना की, प्रेम की, भक्ति की, शृंगार की, अलंकार की, रस की अद्‌भुत छटाएँ धारण किए हुई है। आधुनिक काल में सतसई

परंपरा में जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' कृत 'उद्धव शतक' और वियोगी हरि का 'वीर सतसई' शामिल है, लेकिन इन रचनाओं में बिहारी सतसई जैसी विविधता और गहराई नहीं है।

9.3 बिहारी की कविता में शृंगार, सौंदर्य और प्रेम

शृंगार रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्ति है। 'बिहारी सतसई' को शृंगार का श्रेष्ठ काव्य माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी बिहारी की कविता की प्रधान प्रवृत्ति शृंगारी मानी है किंतु उनकी कविता में वे प्रेम-दृष्टि का अभाव देखते हैं। उन्हीं के शब्दों में, ''कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे रह जाती है।'' पर 'बिहारी सतसई' सूक्ष्म शृंगारिक काव्य नहीं है उसमें सौंदर्य और प्रेम की विविध छवियाँ हैं। वैसे भी शृंगार का प्रेम और सौंदर्य से गहरा रिश्ता है।

9.3.1 संयोग और वियोग शृंगार

शृंगार रस का स्थायी भाव 'रति' है। संयोग और वियोग शृंगार इसके दो भेद हैं। बिहारी का शृंगार वर्णन रीतिकाल में विरल है। संयोग शृंगार में बिहारी ने शृंगार की शास्त्रीय अभिव्यक्ति के साथ उससे अलग शृंगार की मौलिक छवियों का चित्रण भी किया है। नायक-नायिका के प्रेम प्रसंग, उनके हाव-भाव, मान-मनुहार और विविध आंगिक चेष्टाओं और मनोवृत्ति का सुंदर चित्रण बिहारी के दोहों में है। नायिका द्वारा नायक से संवाद और प्रेम-भाव का यह शृंगारिक चित्रण इस संयोग शृंगार के दोहे में देखा जा सकता है :

बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहैं, नटि जाइ।।

नायक से बात करने की लालसा से मुरली को नायिका द्वारा छिपाया जाना, नायक द्वारा माँगने पर भौंहों में हँसना, हास-परिहास, सौगंध खाना और फिर मुरली देने से इंकार करना; नायक-नायिका की आँगिक-चेष्टाओं और शृंगार के संयोग पक्ष का सुंदर चित्रण है। संयोग चित्रण में बिहारी ने बाहरी व्यापार चमत्कारिक वर्णन के साथ आंतरिक हाव-भाव का भी सुंदर वर्णन किया है। नायक-नायिका द्वारा भरे भवन में नैनो के द्वारा आपसी संवाद का यह संयोग चित्रण विरल है :

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन मैं करत हैं, नैननु हीं सब बात।।

संयोग शृंगार में बिहारी ने बाहरी हाव-भाव और व्यापार के साथ नायक-नायिका के अंतर्मन में होने वाली आसक्ति और संवेदना का सुंदर चित्रण किया है।

विरह चित्रण शृंगार काव्य की कसौटी है। रीतिसिद्ध कवि होने से बिहारी की कविता में विरह की दशा का शास्त्रीय चित्रण भी है और विरह की स्वाभाविक और सहज अनुभूतियाँ भी। हालाँकि विरह का स्वच्छंद भाव कमतर है।

बिहारी के काव्य में शास्त्रीय दृष्टि से किया गया विरह चित्रण कृत्रिम और चमत्कारिक लगता है। स्वाभाविक विरह का वर्णन करते समय उनकी कविता में गहन भाव संवेदना होती है। विरह में अतिशयोक्ति और चमत्कारिक चित्रण का कुछ उदाहरण निम्नलिखित है :

इत आवति चलि, जाति उत चली, छसातक हाथ।

चढ़ी हिंडोरैं सौं रहै, लगी उसासनु साथ।।

अर्थात विरह में नायिका इतनी कृशकाय हो गई है कि वह कदम कहीं और रखती है और पड़ते कहीं और हैं। साँस लेने और छोड़ने के क्रम में अपनी जगह से सात हाथ पीछे और आगे चली जाती है। एक अन्य कविता में विरह-ताप के संदर्भ में वे लिखते हैं कि विरह में नायिका का शरीर इतना दग्ध है कि उसे शीतल करने के लिए गुलाब जल की शीशी जो उसके ऊपर डाली जाती है वह बीच में ही सूख जाती है; शरीर पर उसकी एक बूँद भी नहीं पड़ती :

औंधाई सीसी, सु लखि बिरह-बरनि बिललात।

बिच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ छुई न गात।।

प्रिय के विदेश चले जाने पर उसके प्रवास के दौरान ऊपजे विरह के चित्रण की 'बिहारी सतसई' में अधिकता है। प्रवास संबंधी विरह वर्णन में स्वाभाविकता और मार्मिकता भी अधिक है। प्रिय के परदेश जाने की सूचना पाकर प्रिया की बेचैनी बढ़ गई है, उसका गला रूँध गया है, नैनो मे विरह के आँसू भर आए हैं। स्थिति ऐसी हो गई है कि वह जाते हुए नायक से कुछ बोल भी नहीं पा रही है :

ललन-चलन सुनि चुपु रही, बोली आपु न ईठि।

राख्यौ गहि गाढ़ैं गरैं मनौ गलगली डीठि।।

विरह की संवेदना का एक रंग तो यह है जिसमें नायिका प्रिय के बिछोह में शांत है तो दूसरी ओर यह नायिका अपने प्रिय से यह शिकायत करती है कि आपने अपना मन तो मुझे दे दिया, वह मेरा हो गया है, अब कहीं और जाने को तैयार नहीं हैं; लेकिन आप हैं कि उसे सौतिन के हाथ देना चाहते हैं, ऐसा जुल्म तो न कीजिए :

मोंहि दयौ, मेरौ भयौ, रहतु जु मिलि जिय साथ।

सो मनु बाँधि न सौं पियै, पिय, सौतिनि कैं हाथ।।

विरह में नायिका ने नायक के 'अरगजे' (सुगंधित द्रव्य) को 'अबीर' बना के लगा लिया; विरह संताप की यह उदात्तता बिहारी को रीतिकालीन कवियों में विरह के श्रेष्ठ कवि का दर्जा प्रदान करती है :

मैं लै दयौ, लयौ सु, कर छुबत छिनकि गौ नीरू।

लाल, तिहारौ अरगजा उर ह्वै लग्यौ अबीरू।।

बिहारी ने श्रृंगार चित्रण मे विशेष कर विरह चित्रण में कुछ ऐसी मौलिक उद्भावनाएँ की हैं जो उनकी कविता को उत्कृष्ट बनाती हैं। विरहणी की दशा को देखने के लिए बिहारी का यह आग्रह तो खूब है जिसमें वह विरहणी के तन की दारूण दशा दिखाना चाहते हैं। विरह का यह विरल उदाहरण है :

जौ वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आपु।

तौ बलि, नैंक बिलोकियै चलि अचकाँ, चुपचापु।।

9.3.2 सौंदर्य और प्रेम-चित्रण

'बिहारी सतसई' श्रृंगार के साथ सौंदर्य की भी कृति है। श्रृंगार चित्रण में ऐंद्रियता को महत्व दिया जाता है, जबकि सौंदर्य में सौंदर्य के आंतरिक और बाह्य छवियों को चित्रित किया जाता है। श्रृंगार चित्रण करते समय बिहारी की कविताई सौंदर्य को अधिक तरजीह देती है। बिहारी की कविता में वस्तु, प्रकृति और मनुष्य का बहुविध सौंदर्य चित्रण किया गया है। वस्तु

सौंदर्य में कृष्ण की बाँसुरी का सुंदर चित्रण हुआ है– कृष्ण के होठों पर हरे रंग की बाँसुरी की शोभा देखते ही बनती है। हरे रंग की बाँसुरी पर होंठो, आँखों और पीतांबर की आभा पड़ने पर बाँसुरी का रंग इंद्रधनुषी हो जाता है :

अधर धरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि-पट-जोति।

हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष-रँग होति ।।

नायिका के कान में पहने गए तरौना का सुंदर चित्रण करते हुए बिहारी ने लिखा है कि नायिका के कान का यह आभूषण नायिका के सिर पर पड़े सफेद वस्त्र के बीच ऐसे हिल रहा है जैसे धवल गंगा नदी के जल के बीच सूर्य अपने स्वर्णिम आभा के साथ प्रतिबिंबित हो रहा है :

लहतु सेतसारी ढप्यौ, तरल तर्यौना कान।

पर्यो मनौ सुरसरि-सलिल, रबि-प्रतिबिंदु बिहान।।

यह बिहारी की कल्पना शक्ति का सामर्थ्य है जिसमें वह इन वस्तुओं का खूबसूरत सौंदर्य चित्रण करते हैं। प्रकृति का सौंदर्य चित्रण करते समय बिहारी जब अलंकारो का प्रयोग करते हैं, उसकी रंगत और गहरी हो जाती है। नायक और नायिका के सौंदर्य में प्रकृति के छवि सौंदर्य की कल्पना अद्भुत है। अलंकार का प्रयोग करते हुए प्रकृति सौंदर्य का यह उदाहरण देखिए :

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनें गात।

मनौ नीलमनि-सैल पर, आतपु पर्यो प्रभात।।

x x x x

चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट-पट झीन।

मानहुँ सुरसरिता-बिमलजल उछरत जुग मीन ।।

रीतिकालीन कवियों का प्रेम श्रृंगार से जुड़कर ही विकसित होता है। ऐंद्रिक प्रेम से अतींद्रिय प्रेम की छवि यहाँ देखी जा सकती है। बिहारी का कवि-व्यक्तित्व भले ही नागर हो लेकिन उनमें किसानी और पशुपालन संस्कृति की भी झलक है। राधा-कृष्ण के प्रेम का चित्रण करते हुए बिहारी की कविता की मनमोहक छवियों को देखा जा सकता है। प्रेम की गहन अनुभूति और पशुपालन संस्कृति का निम्नलिखित दोहा प्रमाण है। इस दोहे में कृष्ण राधा से अपनी गाय के झुंडो में उनकी गाय न मिलाने का आग्रह करते हैं, लेकिन कृष्ण के प्रेम में मगन राधा कहाँ मानने वाली वह गायें मिला देती हैं। फिर इस कार्यकलाप में दोनों शामिल हैं; दोनों की आँखें मिल जाती हैं तो मन भी मिल जाता है :

उन हरकी हँसी कै, इतै, इन सौंपि मुसकाइ।

नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ।

प्रेम में प्रेमिका और प्रेमी को जग का ख्याल नहीं रहता। नायिका जगनिंदा के डर से प्रेमी के घर से बाहर जाती है लेकिन प्रेम की संवेदना इस कदर प्रभावी हैं कि वह बार बार प्रेमी के घर ही पहुँच जा रही है :

चलतु धेरू घर घर, तऊ घरी न घर ठहराइ।

समुझि उहीं घर कौं चलै, भूलि उहीं घर जाइ।।

प्रेम की इस विकलता और भावुकता को प्रेम का उन्माद या संकीर्णता कहना गलत होगा। यह प्रेम की विकलता का स्वाभाविक चित्रण है।

ऐहिक प्रेम की गहराई विरह की दशा में प्रेम के उदात्त भाव में रूपांतरित हो जाती है। यह सिर्फ भक्त कवियों में नहीं है, रीतिकवि बिहारी के काव्य में भी मौजूद है। कृष्ण गोकुल से मथुरा चले गए हैं, राधा की आँखों मे विरह के उस क्षण में आँसू की कुछ बूँदें उनके सामने बहती यमुना नदी के जल में गिर जाती है और वह जल कुछ समय के लिए खारा हो जाता है। यह प्रेम की गहराई की ही अभिव्यक्ति है :

स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा-तीरू।

अँसुवनु करति तरौंस कौ, खनिकु खरौंहों-नीरू।।

बिहारी की प्रेम-दृष्टि रोमांटिक प्रेम की सहज अभिव्यक्ति है जो उस युग के सामंती समाज के प्रभाव से नही उसके प्रतिरोध में साहसिक प्रेम कहा जाएगा।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) बिहारी ..... धारा के कवि हैं।

(रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

(ख) बिहारी का पूरा नाम ..... है।

(बिहारीदास, बिहारी निधि, बिहारी लाल)

(ग) बिहारी की काव्य भाषा ..... है।

(ब्रज, अवधी, बघेली)

2. निम्नलिखित वाक्यों में सही (√) गलत (x) का निशान लगाइए।

(क) बिहारी मुक्तक परंपरा के कवि हैं।

(ख) बिहारी ने 'बिहारी सतसई' में दोहा छंद का प्रयोग किया हैं।

(ग) बिहारी की कविता में शास्त्रीय परंपरा का पूर्णतया अनुकरण किया गया है।

(घ) बिहारी दरबारी परंपरा के कवि नहीं हैं।

3. 'बिहारी सतसई' का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

4. बिहारी की श्रृंगार भावना की विशिष्टताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. बिहारी के सौंदर्य वर्णन पर प्रकाश डालिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

.....

.....

9.4 बिहारी की कविता में भक्ति, नीति और लोक

'बिहारी सतसई' में शृंगार के साथ भक्ति और नीति के भी प्रचुर दोहे लिखे गए हैं। दोहे शृंगार के ही विस्तार लगते हैं। लोक जीवन का परिदृश्य भी इसी में घुला-मिला है।

बिहारी की कविता में भक्ति का चित्रण उनके शृंगार और सौंदर्य संबंधी दोहों के बीच उनकी काव्य शोभा को बढ़ाता है। सगुण-निर्गुण के विवाद में पड़े बिना वह अपनी कविता में भक्ति का चित्रण करते हैं। 'बिहारी सतसई' का प्रथम दोहा तो राधा को समर्पित है। राधा जो कृष्ण की सर्वस्व है, जिनकी छाया से कृष्ण की आभा सतरंगी हो जाती है।

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परैं स्यामु हरित-दुति होइ।।

बिहारी की भक्ति संबंधी कविता की यह विशेषता है कि वह कृष्ण भक्ति में उनके सौंदर्य की विरलता का चित्रण करते हुए अपनी भक्ति का प्रदर्शन करते हैं।

बिहारी कहते हैं कि हे मुरारि! दुनिया भले ही मुझे ताने दे, मैं अपने टेढ़े स्वभाव को नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि आप की त्रिभंगी छवि को अगर मैं अपनी कविता में लाना चाहता हूँ तो उसमें भी विविध भावों का समावेश करना पड़ेगा। सहज और स्वाभाविक होने पर आपकी त्रिभंगी छवि न समा सकेगी। अतः मैं अपनी कुटिलता न त्यागूँगा :

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल।

दुखी होहुगे सरल हिय बसत, त्रिभंगी लाल।।

बिहारी को लोक की गहरी पहचान है। नीति के दोहे में उनके लोक ज्ञान की परख होती है। मानवीय स्वभाव और जीवन बोध को उन्होंने कई दोहों में व्यक्त किया है :

कनुक कनक तैं सौगुनौ मादकता अधिकाइ।

उहिं खाऐं बौराइ, इहिं पाऐं हीं बौराइ।।

इस दोहे में धतूरा और स्वर्ण की अधिकता की निंदा बिहारी ने की है। दोनों की अधिकता मनुष्य को पागल या बुद्धिहीन कर देती है। बिहारी को शासन-प्रशासन की गहरी समझ थी। उनके अनुसार जिस राज्य में दोहरा शासन होता है उसकी प्रजा दुखी ही रहती है :

दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख-दंदु।

अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रबि-चंदु।।

संसार में दुष्ट और खल व्यक्ति जिसमें बुरे गुण भरे हैं, उसका समाज में बड़ा आदर होता है जबकि सीधे और सरल व्यक्ति को यह संसार तवज्जों नहीं देता :

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।

भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु।।

बिहारी को प्रायः आलोचकों ने नागर संस्कृति का कवि कहा है। यों वह नागर कवि हैं भी लेकिन सिर्फ नागर जीवन का ही चित्रण उनकी कविता में नहीं है। बिहारी में लोक जीवन और लोक संस्कृति की गहरी समझ और संवेदना है। यमुना तट पर नायिका के स्नान करने,

एड़ी घिसने और विरह में नायिका के बावलेपन के चित्रण में बिहारी के ग्राम्य-संस्कृति के सजग बोध का ही पता चलता है :

मुँह धोवति, एड़ी घसति, हसति, अनगवति तीर।

धसति न इंदीबरनयनि, कालिंदी कैं नीर।।

X X

हौं हीं बौरी बिरह-बस, कै बौरौ सबु गाउँ।

कहा जानि ए कहत हैं ससिहिं सीतकर-नाउँ।।

बिहारी के लोक संबंधी ज्ञान को वहाँ भी देखा जा सकता है जब वह जन साधारण में प्रचलित लोक रंजक खेलों, नृत्यों और क्रिया-कलापों का चित्रण करते हैं। पतंगबाजी, नट-विद्या, आँख-मिचौनी ऐसे ही खेल हैं जिनमें सामूहिकता में यह खेल अधिक आनंद की अनुभूति कराता है :

फूले फदकत लै फरी पल कटाच्छ-करवार।

करत बचावत बिय नयन-पाइक धाइ हजार।।

X X

इत तैं उत, उत तैं इतै, छिन न कहूँ ठहराति।

जक न परति, चकरी भई, फिरि आवति फिरि जाति

लोक जीवन की ये छवियाँ बिहारी को रीति काव्य का विशिष्ट कवि बनाती हैं।

9.5 बिहारी की कविता की काव्य भाषा और काव्य रूप

'बिहारी सतसई' ब्रजभाषा का प्रतिमान है। बिहारी ने रीतिशास्त्र पर ग्रंथ नहीं लिखा है लेकिन रीतिशास्त्र की कलात्मकता के वे पारखी हैं। दोहा जैसे छोटे छंद में उन्होंने भाषा की समाहार शक्ति और ध्वन्यात्मकता एवं वाग-वैचित्र्य का सुंदर प्रयोग किया है। बिहारी की भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं, ''बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है। वाक्य रचना व्यवस्थित है और शब्दों के रूप का व्यवहार एक निश्चित प्रणाली पर है। यह बात बहुत कम कवियों में पाई जाती है। ब्रजभाषा के कवियों में शब्दों को तोड़-मरोड़ कर विकृत करने की आदत बहुतों में पाई जाती है। भूषण और देव ने शब्दों का बहुत अंग-भंग किया है और कहीं-कहीं गलत शब्दों का व्यवहार किया है। बिहारी की भाषा बहुत कुछ इस दोष से भी मुक्त है।''

बिहारी ने काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। भक्तिकाल में ब्रजभाषा का विकास अष्टछाप के कवियों– सूर और नंददास के हाथों हो चुका था। बिहारी के यहाँ ब्रजभाषा की सर्जनात्मकता का चरम दिखाई देता है। बिहारी ने ब्रजभाषा में उसकी सहवर्ती जनपदीय भाषाओं का प्रयोग कर उसको समृद्ध बनाया है विशेष रूप से बुंदेलखंडी, अवधी शब्दों के चयन की सजगता और अलंकरण से बिहारी ने ब्रजभाषा का भाषिक सौंदर्य बढ़ाया। ब्रजभूमि की उत्सवी संस्कृति और कला की शास्त्रीय पद्धति से बिहारी ने भाषा में जो संस्कार पैदा किया वह रीतिकाल में अनूठी है। ब्रजभाषा को इस नए संस्कार से समृद्ध करने के संदर्भ में 'मध्यकालीन हिंदी भाषा' पुस्तक में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने सही लिखा है, ''ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक दोनों स्तरों पर कवि की यह भाषिक तराश रीतिकालीन मनोवृत्ति और

मुगलकालीन कला की बारीक पसंदी के समानांतर चलती है। इस संदर्भ में बिहारी को रीतिकालीन काव्य भाषा का प्रतिनिधि कहा जा सकता है।''

'उक्ति वैचित्र्य' और 'अर्थ गांभीर्य' के द्वारा बिहारी ने भाषा की अभिव्यंजना शक्ति का कौशलपूर्ण प्रयोग किया है। छोटे और अर्थ गर्भित शब्दों के प्रयोग भाषा को विलक्षण बनाता है। 'उक्ति वैचित्र्य' और 'अर्थ गांभीर्य' का यह दोहा नायाब उदाहरण है :

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौंन मैं करत है, नैननु ही सब बात।।

नेत्रों की भाषा का इसमें सांकेतिक प्रयोग है। आँखों ही आँखों में सारी बातें भरे भवन में करना, रीझना, खीझना, खिलना और अंत में नेत्रों के दो चार होने से लजाने की सुंदर अभिव्यक्ति यहाँ है। बिहारी अपनी समास पद्धति के लिए भी जाने जाते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल सफल कवि में कल्पना की समाहार शक्ति और समास शक्ति का संयोजन आवश्यक मानते हैं। बिहारी में ये दोनों क्षमताएँ विद्यमान हैं।

छोटे दोहे में पौराणिकता की सफल योजना, बड़े प्रसंगो का सफल नियोजन, उपमा, रूपक, सांग रूपक, असंगति अलंकारो का सुंदर विधान– बिहारी की समास पद्धति की विशेषता है। असंगति अलंकार का यह दोहा जिसमें प्रेम-व्यापार को दो पंक्तियों में कौशलपूर्वक रचा गया है :

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।

परति गाँठि दुरजन-हियैं, दई, नई यह रीति।

बिहारी थोड़े में बहुत कहने वाले कवि के रूप में ख्यात हैं। समास पद्धति की इसी विशेषता के कारण उन्हें 'गागर में सागर' भरने वाले कवि के रूप में जाना जाता है।

बिहारी प्रबंधकार नहीं मुक्तक काव्य के कवि हैं। दोहा जैसे मुक्तक काव्य रूप का प्रयोग वे मुख्य रूप से करते हैं। रहीम ने दोहा की खूबी में जो कहा वह बिहारी के दोहों पर पूरी तरह लागू किया जा सकता है :

दीरघ दोहा अरथ के आखर थोड़े आहिं।

ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमंति कूदिं चलि जाहिं।।

बिहारी के दोहों के लिए कहा भी गया है– 'सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।' बिहारी दोहा में समास पद्धति, व्यंग्य-वैचित्र्य और अर्थ गांभीर्य पिरोने वाले दक्ष कवि हैं। दोहा में सूक्तियों और मुहावरों का सुंदर प्रयोग बिहारी के यहाँ मौजूद है। इनका प्रयोग वह शब्द और अर्थ के चमत्कार के लिए करते हैं, इसके साथ ही दोहों में रस की व्याप्ति पर भी सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं। उनके यहाँ दोहा में माधुर्य गुण की अधिकता है। अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन में भी आकर्षण है :

इत आवति चलि, जाति उत चली, छसातक हाथ

सूक्तियों का प्रयोग देखें :

नल-बल जलु ऊँचैं चढ़ै, अंत नीच कौ नीचु

X X

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु

X X

अनबूड़े-बूड़े, तरे, जे बूड़े सब अंग

बिहारी अपने अलंकार प्रयोग के लिए खूब सराहे गए हैं। रीतिकाल को कुछ आलोचक अलंकार की अधिकता के कारण अलंकृत काल भी कहते हैं। बिहारी की कविता में कहीं-कहीं तो अलंकार चमत्कार उत्पन्न करने का काम करता है लेकिन प्रायः वह कविता की स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल होता है। शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों की सर्जनात्मक छवियाँ बिहारी के काव्य में मौजूद है। यमक और श्लेष तो उनका प्रिय अलंकार है। यमक अलंकार के उदाहरण के रूप में इस छोटे दोहे की चर्चा बार-बार की जाती है :

कनकु कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाऐं बौराइ, इहिं पाऐं हीं बौराइ।।

इसमें 'कनक' शब्द को 'स्वर्ण' और 'धतूरे' के अर्थ में प्रयोग किया गया है। इसी तरह श्लेष अलंकार में सुमन का प्रयोग सुंदर मन और पुष्प के अर्थ में है। इसी प्रकार अनुप्रास तद्गुण, अतिशयोक्ति, विरोधाभास उपमा, रूपक आदि अलंकारों का सुंदर विधान बिहारी के काव्य में है। बिहारी की कविता में उनके द्वारा प्रयोग किए गए अलंकार रूप और भाव दोनों को समृद्ध करते हैं।

बोध प्रश्न

6. निम्नलिखित कथनों के आगे सही (✓) अथवा गलत (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) बिहारी को प्रायः आलोचकों ने नागर संस्कृति का कवि कहा है। ( )

(ख) बिहारी ने धतूरे की तुलना पानी से की है। ( )

(ग) बिहारी की भाषा में मैथिली के भी शब्द आए हैं। ( )

(घ) 'कनकु कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाइ'। इस पंक्ति में यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है। ( )

7. बिहारी सिर्फ सौंदर्य और शृंगार के ही कवि नहीं है। इस कथन पर अपना मत व्यक्त कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8. बिहारी की काव्य भाषा की विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9. बिहारी की 'बहुज्ञता' का संक्षिप्त विवेचन कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 बिहारी की कविता का वाचन और आस्वादन

कविता का वाचन

देखिए– परिशिष्ट

कविता का आस्वादन

- **मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई। ...**

संदर्भ

यह भक्तिपरक दोहा 'बिहारी सतसई' से लिया गया है। रचनाकार रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं। यह 'बिहारी सतसई' का मंगलाचरण है। इस दोहे की यह विशेषता है कि इसमें कवि इष्ट रूप में 'राधा नागरी' की वंदना कर रहे हैं।

व्याख्या

कवि बिहारी का कहना है कि राधा नागरी मेरी सभी बाधा और कष्टों को दूर करें जिनके गौर शरीर की छाया पड़ने से कृष्ण (काला) रंग के श्याम का रंग हरित हो जाता है। दूसरे अर्थ में कवि कहता है कि वह नागरी राधा मेरी सभी सांसारिक बाधाओं को दूर करें जिनके शरीर के छाया मात्र का ध्यान करके श्याम (कृष्ण) का मन प्रसन्न हो जाता है। उनके मन

में प्रकाश फैल जाता है। पहले अर्थ में राधा की सुंदरता यानि की उसके शरीर के रंग– गुराई की सरहना की गई है। दूसरे अर्थ में राधा एवं कृष्ण के बीच प्रेम और रागात्मकता का संकेत किया गया है।

विशेष

(I) बिहारी के इस दोहे में 'गागर में सागर' वाली उक्ति पूरी तरह से लागू होती है। कवि का रंग बोध काबिले तारीफ है। 'झाँई', 'स्यामु', 'हरित' में श्लेष अलंकार है। 'झाँई का अर्थ है– छाया, झलक; 'स्यामु' का अर्थ है– कृष्ण और काला रंग और 'हरित' का अर्थ है हरा रंग।

(II) यहाँ सूर की रंग रची राधा रीतिकाव्य में पहुँचकर नागर हो जाती हैं। इसे युगीन परिवेश और बिहारी के नागर बोध से जोड़कर भी देखा जा सकता है।

- **कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात। ...**

संदर्भ

बिहारी रचित 'बिहारी सतसई' के इस दोहे में चतुर नायक-नायिका के आँखों की चेष्टा से भावों की अभिव्यक्ति का सुंदर चित्रण है। भरे हुए भवन में नेत्रों के द्वारा ही संवाद हो सकता है। इस दोहे में नायक नायिका से परिजनों से भरे भवन में प्रेम निवेदन करता है।

व्याख्या

कवि कहता है कि देखो नायक और नायिका कितने चतुर हैं कि स्वजनों और गुरुजनों से भरे भवन में आँखों-आँखों में ही सारी अभीष्ट बातें कर लेते हैं। अपने मन की सारी बातें एक दूसरे से बिना बोले आँखों से कह लेते हैं। इस संवाद की प्रक्रिया में नायक के प्रणय निवेदन को नायिका मना कर देती है तो नायक उसकी इस अदा पर रीझ जाता है तब नायिका, नायक के रीझने की अदा पर खीझ जाती है, फिर दोनों मेल कर लेते हैं। नायिका के द्वारा प्रेम निवेदन स्वीकार कर लेने पर नायक पुनः हँस देता है जिससे नायिका लज्जित हो जाती है।

विशेष

इस दोहे में बिहारी की अद्‌भुत संवाद कला की दक्षता का पता चलता है। शब्द मैत्री भी सुंदर है।

- **बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ। ...**

व्याख्या

प्रस्तुत दोहे में नायिका (राधा) द्वारा नायक (कृष्ण) से बातचीत करने के लालच से कृष्ण की बाँसुरी चुराने का सुंदर चित्रण है। कृष्ण और राधा के इस प्रेम संवाद का जिक्र एक सखी दूसरे सखी से करती है। राधा ने बतरस की लालच से कृष्ण की बाँसुरी को कहीं छिपाकर रख दिया है। इसके बाद कृष्ण राधा से संवाद करते हैं। उनसे पूछते हैं और कहते हैं कि शपथ बाबा की कि जो मेरी मुरली खोज देगा उसका अहसान मैं जीवन भर न भूलूँगा। कृष्ण

की यह बात सुन राधा भौंहो से (आँखों से) हँसती हैं। उनकी हँसी से कृष्ण को विश्वास हो जाता है कि उनकी मुरली राधा ने ही चुराई है। वह कृष्ण को मुरली देने का वादा करती हैं लेकिन देने से मुकर जाती हैं। इस तरह प्रेम से भरा संवाद चलता है।

- **मोहन-मूरति स्याम की अति अदभुत गति जोई। ...**

व्याख्या

जिस श्याम (कृष्ण) की मूर्ति मन को मोहने वाली है उसकी लीला (गति) भी विचित्र है। वह चित्त के अंदर अर्थात हृदय में रहता है, परंतु अंदर रहने के बावजूद समस्त संसार में वह प्रतिबिंबित होता है।

- **अधर धरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि-पट-जोती। ...**

व्याख्या

कृष्ण जब अपने ओठ पर बाँसुरी रखते हैं तब उस पर उनके ओठ (लाल), दृष्टि यानी आँख (काली) तथा वस्त्र (पीली) की ज्योति पड़ती है और इस कारण हरे रंग के बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष की तरह दीखने लगती है।

- **तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु। ...**

व्याख्या

बिहारी कहते हैं कि तीर्थ यात्रा को छोड़ कृष्ण और राधा के शरीर की कांति से अपना प्रेम बढ़ाओ। इस अनुराग से ब्रज के निकुंज की राह, जहाँ राधा-कृष्ण क्रीड़ा करते हैं, वह कदम-कदम पर प्रयाग अर्थात तीर्थराज हो जाता है। तात्पर्य यह है कि तीर्थयात्रा से किसी एक

तीर्थ का पुण्य प्राप्त होता है लेकिन स्वयं भगवान कृष्ण और राधा से प्रेम बढ़ाने से तीर्थराज प्रयाग का पुण्य ब्रज में ही प्राप्त हो जाता है।

- **या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहीं कोई। ...**

व्याख्या

इस अनुरागी चित्त की विलक्षणता को कोई नहीं जानता। ज्यों-ज्यों यह श्याम रंग (काले रंग) में डूबता है और उज्ज्वल (सफेद) होता जाता है। यहाँ तात्पर्य यह है कि श्याम वर्ण के कृष्ण के प्रेम में मनुष्य जितना डूबता जाता है उसका अंतःकरण उतना ही निर्मल होता जाता है।

- **नहिं परागु, नहीं मधुर मधु, नहीं बिकासु इहिं काल। ...**

व्याख्या

फूल अभी विकसित नहीं हुआ है। वह कली के रूप में है। उसमें न तो पराग बना है, न ही मधु। हे भ्रमर! तू अभी से उससे बँध गए हो, आगे फूल की क्या दशा होगी? कवि ने कली और भँवरे के माध्यम से आसक्त व्यक्ति को शिक्षा दी है कि प्रेम एवं रागात्मकता की एक उम्र होती है। समय से पूर्व उसमें डूब जाना औचित्यपूर्ण नहीं है।

- **संगति-दोषु लगै सबनु, कहे ति साँचे बैन। ...**

व्याख्या

कवि कहता है कि यह सत्य वचन है कि संगति का दोष सबको लगता है। अर्थात जो जैसे लोगों के साथ रहता है उसमें वैसी प्रवृत्ति आ जाती है, वैसे ही जैसे टेढ़ी भृकुटी के साथ आँख की गति भी टेढ़ी हो जाती है।

9.7 सारांश

- बिहारी रीतिकाव्य के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनकी रचना 'बिहारी सतसई' रीतिकाल की प्रतिनिधि रचना है। बिहारी सतसई में 'गागर में सागर' की तरह दोहा जैसे छोटे छंद में उक्ति वैचित्र्य और अर्थ गांभीर्य का समावेश है।
- 'बिहारी सतसई' में सतसई और मुक्तक परंपरा का आत्मसात है तो इसमें मौलिकता का विधान भी है।
- भक्ति, नीति, ज्योतिष, कला, श्रृंगार, सौंदर्य और प्रेम का सुंदर निदर्शन बिहारी के काव्य की खूबी है।
- भाषा पर बिहारी का एकाधिकार है। भाषा की समाहार शक्ति और समास पद्धति में वह सिद्धहस्त हैं। शास्त्रीय परंपरा के आचार्य न होने पर भी रस, छंद, अलंकार, ध्वनि और शब्दों के प्रयोग में वह सफल कवि हैं।
- ब्रजभाषा की सर्जनात्मकता का उत्तम उदाहरण है बिहारी की कविता में।
- बिहारी नागर बोध के कवि हैं लेकिन उनमें लोक-व्यापार के भी सुंदर चित्र हैं।

9.8 शब्दावली

सतसई – सात सौ दोहों या छंदों की रचना

रीतिसिद्ध – रीतिशास्त्र का अनुकरण नहीं, रीति परंपरा की व्याप्ति और मौलिक काव्य प्रयोग

गागर में सागर – थोड़े में बहुत

भाव सघनता – भाव की गहन संवेदना

विरल – विशेष

ऐंद्रिक प्रेम – शारीरिक या भौतिक प्रेम

9.9 उपयोगी पुस्तकें

- *हिंदी साहित्य का इतिहास* – आचार्य रामचंद्र शुक्ल; नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
- *हिंदी साहित्य का अतीत-2* – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- *रीतिकाव्य की भूमिका* – डा. नगेंद्र; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- *बिहारी काव्य का नया मूल्यांकन* – डा. बच्चन सिंह; हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
- *मध्यकालीन काव्य-* भाषा रामस्वरूप चतुर्वेदी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) रीतिसिद्ध

   (ख) बिहारीलाल

   (ग) ब्रज

2. (क) √

   (ख) √

   (ग) x

(घ) ✗

3. देखिए– भाग 9.2.2

4. देखिए– भाग 9.3.1

5. देखिए– भाग 9.3.2

6. (क) ✓

(ख) ×

(ग) ×

(घ) ✓

7. देखिए– भाग 9.4

8. देखिए– भाग 9.5

9. उत्तर पूरे पाठ को पढ़कर तैयार कीजिए।